



# United Liberal FOUNDATION

(EDUCATION is ABOUT creating leaders for tomorrow)

Reference Number: - IND/WB/ULF/NCERT/2022/0005

Date: - 23 June 2022

## CBSE Class 9 History Notes Chapter 5 – Pastoralists in the Modern World

### सीबीएसई कक्षा 9 इतिहास नोट्स अध्याय 5 - आधुनिक दुनिया में पशुचारक

#### Pastoral Nomads and their Movements

#### देहाती खानाबदोश और उनके आंदोलन

In the Mountains

पर्वतों के बीच

In the nineteenth century, Gujjar Bakarwals of Jammu and Kashmir migrated to the mountains in search of pastures for their animals. During the winter, they moved to low hills of the Siwalik range. By the end of April, they began their northern march for their summer grazing grounds. This journey is known as a kafila. Again, they started their march by the end of September, this time back to their winter base. The Gaddi shepherds of Himachal Pradesh also had a similar cycle of seasonal movement.

उन्नीसवीं शताब्दी में, जम्मू और कश्मीर के गुर्जर बकरवाल अपने जानवरों के लिए चारागाह की तलाश में पहाड़ों पर चले गए। सर्दियों के दौरान, वे शिवालिक श्रेणी की निचली पहाड़ियों में चले गए। अप्रैल के अंत तक, उन्होंने अपने ग्रीष्मकालीन चरागाह के लिए अपना उत्तरी मार्च शुरू किया। इस यात्रा को काफिला के नाम से जाना जाता है। फिर से, उन्होंने सितंबर के अंत तक अपना मार्च शुरू किया, इस बार वापस अपने शीतकालीन आधार पर। हिमाचल प्रदेश के गद्दी चरवाहों का भी मौसमी आंदोलन का एक समान चक्र था।

The Gujjar cattle herds from the further east came down to the dry forests of the bhabar in the winter and went up to the high meadows – the bughyals – in summer. This pattern of cyclical movement between summer and winter pastures was typical of many pastoral communities of the Himalayas, including the Bhotiyas, Sherpas and Kinnauris.

आगे पूर्व से गुर्जर मवेशी सर्दियों में भाबर के सूखे जंगलों में आ गए और गर्मियों में ऊंचे घास के मैदानों - बुग्यालों तक चले गए। गर्मियों और सर्दियों के चरागाहों के बीच चक्रीय आंदोलन का यह पैटर्न भोटिया, शेरपा और किन्नौरी सहित हिमालय के कई देहाती समुदायों के लिए विशिष्ट था।

#### On the Plateaus, Plains and Deserts

#### पठारों, मैदानों और रेगिस्तानों पर

Pastoralists were also found in the plateaus, plains and deserts of India. In Maharashtra, Dhangars were an important pastoral community who were mostly, shepherds, blanket weavers, and buffalo herders. During the monsoon, they used to stay in the central plateau of Maharashtra. By October the Dhangars harvest their bajra and move to the west. After they reached Konkan, they were welcomed by Konkani peasants. After the kharif harvest was cut, the fields had to be fertilised and made ready for the rabi harvest.

चरवाहे भारत के पठारों, मैदानों और रेगिस्तानों में भी पाए जाते थे। महाराष्ट्र में, धनगर एक महत्वपूर्ण देहाती समुदाय थे, जो ज्यादातर चरवाहे, कंबल बुनकर और भैंस चराने वाले थे। मानसून के दौरान, वे महाराष्ट्र के मध्य पठार में रहते थे। अक्टूबर तक धनगर अपने बाजरे की कटाई करते हैं और पश्चिम की ओर चले जाते हैं। कोंकण पहुँचने के बाद कोंकणी किसानों ने उनका स्वागत किया। खरीफ की फसल कट जाने के बाद, खेतों को उर्वरित किया जाना था और रबी की फसल के लिए तैयार किया जाना था।

In the state of Karnataka and Andhra Pradesh, the dry central plateau was covered with stone and grass, inhabited by

cattle, goats and shepherders called Gollas herded cattle. The Kurumas and Kurubas reared sheep and goats and sold woven blankets. During the dry season, they moved to the coastal tracts and left when the rains came. Banjaras were yet another well-known group of graziers, found in the villages of Uttar Pradesh, Punjab, Rajasthan, Madhya Pradesh and Maharashtra.

कर्नाटक और आंध्र प्रदेश राज्य में, शुष्क केंद्रीय पठार पत्थर और घास से ढका हुआ था, जिसमें मवेशियों, बकरियों और भेड़-बकरियों का निवास था, जिन्हें गोल्ला झुंड वाले मवेशी कहा जाता था। कुरुमा और कुरुबा भेड़ और बकरियों का पालन-पोषण करते थे और बुने हुए कंबल बेचते थे। शुष्क मौसम के दौरान, वे तटीय इलाकों में चले गए और बारिश आने पर चले गए। बंजारा चराई का एक और प्रसिद्ध समूह था, जो उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के गांवों में पाया जाता था।

Raikas lived in the deserts of Rajasthan. During the monsoons, the Raikas of Barmer, Jaisalmer, Jodhpur and Bikaner stayed in their villages, where pasture was available. By October, they moved out in search of other pasture and water and returned again during the next monsoon.

रायका राजस्थान के रेगिस्तान में रहते थे। मानसून के दौरान बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर और बीकानेर के रायका अपने गांवों में रहते थे, जहां चारागाह उपलब्ध था। अक्टूबर तक, वे अन्य चारागाह और पानी की तलाश में बाहर चले गए और अगले मानसून के दौरान फिर से लौट आए।

Pastoral group's life was sustained by a host of factors. They had to judge how long the herds could stay in one area, and where they could find water and pasture. They needed to calculate the timing of their movements and ensure that they could move through different territories. They had to set up a relationship with farmers on the way so that the herds could graze in harvested fields and manure the soil.

देहाती समूह का जीवन कई कारकों से टिका हुआ था। उन्हें यह तय करना था कि झुंड एक क्षेत्र में कितने समय तक रह सकते हैं, और उन्हें पानी और चारा कहाँ मिल सकता है। उन्हें अपने आंदोलनों के समय की गणना करने और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता थी कि वे विभिन्न क्षेत्रों से गुजर सकें। उन्हें रास्ते में किसानों के साथ संबंध स्थापित करना पड़ा ताकि झुंड कटे हुए खेतों में चर सकें और मिट्टी में खाद डाल सकें।

## Colonial Rule and Pastoral Life

### औपनिवेशिक शासन और देहाती जीवन

Pastoralist's life changed completely, under colonial rule. Their movements were regulated, grazing grounds shrank, and the revenue they had to pay increased. Even their agricultural stock declined and their trades and crafts were adversely affected. It happened due to the following reasons:

औपनिवेशिक शासन के तहत पशुचारक का जीवन पूरी तरह से बदल गया। उनके आंदोलनों को विनियमित किया गया, चरागाह सिकुड़ गए, और उन्हें राजस्व का भुगतान करना पड़ा। यहां तक कि उनके कृषि स्टॉक में भी गिरावट आई और उनके व्यापार और शिल्प पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। यह निम्नलिखित कारणों से हुआ:

1. Land revenue was one of the main sources for finance of the colonial state. So, the colonial government wanted to transform all grazing lands into cultivated farms through which they could expand cultivation and increase its revenue collection. All uncultivated land was seen as 'waste land'. From the mid-nineteenth century, Waste Land Rules were enacted in various parts of the country. Under these rules, uncultivated lands were taken over and given to select individuals.

भूमि राजस्व औपनिवेशिक राज्य के वित्त के मुख्य स्रोतों में से एक था। इसलिए, औपनिवेशिक सरकार सभी चराई भूमि को खेती वाले खेतों में बदलना चाहती थी जिसके माध्यम से वे खेती का विस्तार कर सकते थे और इसके राजस्व संग्रह में वृद्धि कर सकते थे। सभी बंजर भूमि को 'बंजर भूमि' के रूप में देखा जाता था। उन्नीसवीं सदी के मध्य से देश के विभिन्न भागों में बंजर भूमि नियम लागू किए गए। इन नियमों के तहत, बंजर भूमि को अपने कब्जे में ले लिया गया और चुनिंदा व्यक्तियों को दे दिया गया।

2. By the mid-nineteenth century, various Forest Acts were being enacted in different provinces. According to these Acts, forests which produced commercially valuable timber like deodar or sal were declared 'Reserved' and other forests were classified as 'Protected'. These Forest Acts changed the lives of pastoralists as they were prevented from entering many forests.

उन्नीसवीं सदी के मध्य तक विभिन्न प्रांतों में विभिन्न वन अधिनियम बनाए जा रहे थे। इन अधिनियमों के अनुसार, वे वन जो वाणिज्यिक रूप से मूल्यवान लकड़ी जैसे देवदार या साल का उत्पादन करते थे, उन्हें 'आरक्षित' घोषित किया गया था और अन्य वनों को 'संरक्षित' के रूप में वर्गीकृत किया गया था। इन वन अधिनियमों ने चरवाहों के जीवन को बदल दिया क्योंकि उन्हें कई जंगलों में प्रवेश करने से रोक दिया गया था।

3. British officials were suspicious of nomadic people. The colonial government wanted to rule over a settled population. In 1871, the colonial government in India passed the Criminal Tribes Act. By this Act many communities of craftsmen, traders and pastoralists were classified as Criminal Tribes. They were stated to be criminals by nature and birth.

ब्रिटिश अधिकारियों को खानाबदोश लोगों पर शक था। औपनिवेशिक सरकार एक बसी हुई आबादी पर शासन करना चाहती थी। 1871 में, भारत में औपनिवेशिक सरकार ने आपराधिक जनजाति अधिनियम पारित किया। इस अधिनियम द्वारा शिल्पकारों, व्यापारियों और चरवाहों के कई समुदायों को आपराधिक जनजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया था। वे स्वभाव और जन्म से अपराधी बताए गए थे।

4. Taxation was imposed on land, on canal water, on salt, on trade goods, and even on animals. In most pastoral tracts of India, grazing tax was introduced in the mid-nineteenth century. In the decades between the 1850s and 1880s, the right to collect the tax was auctioned out to contractors. By the 1880s the government began collecting taxes directly from the pastoralists.

भूमि पर, नहर के पानी पर, नमक पर, व्यापारिक वस्तुओं पर और यहाँ तक कि जानवरों पर भी कराधान लगाया जाता था। भारत के अधिकांश देहाती इलाकों में, उन्नीसवीं सदी के मध्य में चराई कर लागू किया गया था। 1850 और 1880 के बीच के दशकों में, कर एकत्र करने का अधिकार ठेकेदारों को नीलाम कर दिया गया था। 1880 के दशक तक सरकार ने सीधे चरवाहों से कर एकत्र करना शुरू कर दिया।

### **How Did these Changes Affect the Lives of Pastoralists?**

#### **इन परिवर्तनों ने चरवाहों के जीवन को कैसे प्रभावित किया?**

Due to these measures, there was a shortage of pastures. When grazing lands were taken over and turned into cultivated fields, the available area of pastureland declined. As pasturelands disappeared under the plough, the existing animal stock had to feed on whatever grazing land remained. When restrictions were imposed on pastoral movements, grazing lands came to be continuously used and the quality of pastures declined. This, in turn, created a further shortage of forage for animals and the deterioration of animal stock.

इन उपायों के कारण चारागाहों की कमी हो गई। जब चराई की भूमि पर कब्जा कर लिया गया और खेती के खेतों में बदल दिया गया, तो चारागाह के उपलब्ध क्षेत्र में गिरावट आई। जैसे ही चारागाह हल के नीचे गायब हो गए, मौजूदा पशु स्टॉक को जो भी चारागाह भूमि रह गई, उसे खिलाना पड़ा। जब पशुचारण आंदोलनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया, तो चरागाह भूमि का लगातार उपयोग किया जाने लगा और चारागाहों की गुणवत्ता में गिरावट आई। इसने, बदले में, जानवरों के लिए चारे की और कमी और पशु स्टॉक की गिरावट को जन्म दिया।

### **How Did the Pastoralists Cope with these Changes?**

#### **चरवाहों ने इन परिवर्तनों का सामना कैसे किया?**

Pastoralists reacted to these changes in various ways. They reduced the number of cattle and some discovered new pastures. After 1947, the new political boundaries between India and Pakistan stopped the camel and sheep herding Raikas, to graze their camels on the banks of the Indus. Over the years, some richer pastoralists bought land and settled down, giving up their nomadic life. Some became peasants by cultivating land, others indulged in trading. On the other hand, poor pastoralists, borrowed money from moneylenders to survive. They still continued to survive and in many regions, their numbers have expanded. In many other parts of the world, new laws and settlement patterns forced pastoral communities to alter their lives.

इन परिवर्तनों पर चरवाहों ने विभिन्न तरीकों से प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने मवेशियों की संख्या कम कर दी और कुछ ने नए चरागाहों की खोज की। 1947 के बाद, भारत और पाकिस्तान के बीच नई राजनीतिक सीमाओं ने ऊँट और भेड़ चराने वाले रायका को सिंधु के तट पर अपने ऊँटों को चराने के लिए रोक दिया। इन वर्षों में, कुछ अमीर चरवाहों ने जमीन खरीदी और अपना खानाबदोश जीवन छोड़कर बस गए। कुछ जमीन पर खेती करके किसान बन गए, कुछ लोग व्यापार में शामिल हो गए। दूसरी ओर, गरीब चरवाहों ने जीवित रहने के लिए साहूकारों से पैसे उधार लिए। वे अभी भी जीवित रहे और कई क्षेत्रों में उनकी संख्या का विस्तार हुआ। दुनिया के कई अन्य हिस्सों में, नए कानूनों और बंदोबस्त पैटर्न ने देहाती समुदायों को अपना जीवन बदलने के लिए मजबूर किया।

### **Pastoralism in Africa**

#### **अफ्रीका में पशुचारण**

In Africa, even today, over 22 million Africans depend on some form of pastoral activity for their livelihood. Like

pastoralists in India, the lives of African pastoralists have changed dramatically over the colonial and post-colonial periods.

अफ्रीका में, आज भी, 22 मिलियन से अधिक अफ्रीकी अपनी आजीविका के लिए किसी न किसी रूप में देहाती गतिविधियों पर निर्भर हैं। भारत में चरवाहों की तरह, अफ्रीकी चरवाहों का जीवन औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक काल में नाटकीय रूप से बदल गया है।

## **Where have the Grazing Lands Gone?**

### **चरागाह भूमि कहाँ चली गई है?**

Before colonial times, Maasailand stretched over a vast area from north Kenya to the steppes of northern Tanzania. In 1885, it was cut into half with an international boundary between British Kenya and German Tanganyika. After the cut, the best grazing lands were gradually taken over for white settlement and the Maasai were pushed into a small area in south Kenya and north Tanzania. From the late nineteenth century, the British colonial government in east Africa encouraged local peasant communities to expand cultivation. In pre-colonial times, the Maasai pastoralists had dominated their agricultural neighbours both economically and politically. The loss of the finest grazing lands and water resources created pressure on the small area of land that the Maasai were confined within.

औपनिवेशिक काल से पहले, मासाईलैंड उत्तरी केन्या से उत्तरी तंजानिया के मैदानों तक एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ था। 1885 में, ब्रिटिश केन्या और जर्मन तांगानिका के बीच एक अंतरराष्ट्रीय सीमा के साथ इसे आधा कर दिया गया था। कटौती के बाद, सबसे अच्छी चराई वाली भूमि को धीरे-धीरे सफेद बस्ती के लिए ले लिया गया और मासाई को दक्षिण केन्या और उत्तरी तंजानिया के एक छोटे से क्षेत्र में धकेल दिया गया। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से, पूर्वी अफ्रीका में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने स्थानीय किसान समुदायों को खेती का विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित किया। पूर्व-औपनिवेशिक समय में, मासाई चरवाहों ने आर्थिक और राजनीतिक दोनों रूप से अपने कृषि पड़ोसियों पर प्रभुत्व किया था। बेहतर चराई वाली भूमि और जल संसाधनों के नुकसान ने भूमि के उस छोटे से क्षेत्र पर दबाव बनाया जिसमें मासाई सीमित थे।

## **The Borders are closed**

### **सरहदें बंद हैं**

In the nineteenth century, African pastoralists could move over vast areas in search of pastures. But, from the late nineteenth century, the colonial government began imposing various restrictions on their mobility. White settlers and European colonists saw pastoralists as dangerous and savage. The new territorial boundaries and restrictions imposed on them suddenly changed the lives of pastoralists, which adversely affected both their pastoral and trading activities.

उन्नीसवीं सदी में, अफ्रीकी चरवाहे चरागाहों की तलाश में विशाल क्षेत्रों में जा सकते थे। लेकिन, उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से, औपनिवेशिक सरकार ने उनकी गतिशीलता पर विभिन्न प्रतिबंध लगाना शुरू कर दिया। गोरे बसने वालों और यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने चरवाहों को खतरनाक और बर्बर के रूप में देखा। नई क्षेत्रीय सीमाओं और उन पर लगाए गए प्रतिबंधों ने अचानक चरवाहों के जीवन को बदल दिया, जिससे उनकी देहाती और व्यापारिक गतिविधियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

## **When Pastures Dry**

### **जब चरागाह सूख जाए**

Pastoralists' lives were affected by drought everywhere. That is why, traditionally, pastoralists move from place to place to survive bad times and avoid crises. But from the colonial period, the Maasai were bound down to a fixed area, confined within a reserve, and prohibited from moving in search of pastures. As the area of grazing lands shrank, the adverse effect of the droughts increased in intensity.

चरवाहों का जीवन हर जगह सूखे से प्रभावित था। इसीलिए, परंपरागत रूप से, पशुचारक बुरे समय से बचने और संकटों से बचने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं। लेकिन औपनिवेशिक काल से, मासाई एक निश्चित क्षेत्र में बंधे हुए थे, एक रिजर्व के भीतर सीमित थे, और चरागाहों की तलाश में जाने से प्रतिबंधित थे। जैसे-जैसे चरागाहों का क्षेत्र सिकुड़ता गया, सूखे का प्रतिकूल प्रभाव तीव्रता से बढ़ता गया।

## **Not all were Equally Affected**

### **सभी समान रूप से प्रभावित नहीं थे**

In Maasailand, not all pastoralists were equally affected by the changes in the colonial period. In pre-colonial times Maasai society was divided into two social categories – elders and warriors. The elders formed the ruling group and met in periodic councils to decide on the affairs of the community and settle disputes. The warriors consisted of

younger people, mainly responsible for the protection of the tribe and defended the community and organised cattle raids.

मासाईलैंड में, सभी चरवाहे औपनिवेशिक काल में हुए परिवर्तनों से समान रूप से प्रभावित नहीं थे। पूर्व-औपनिवेशिक काल में मासाई समाज दो सामाजिक श्रेणियों में विभाजित था - बुजुर्ग और योद्धा। बुजुर्गों ने शासक समूह का गठन किया और समुदाय के मामलों पर निर्णय लेने और विवादों को निपटाने के लिए समय-समय पर परिषदों में मुलाकात की। योद्धाओं में युवा लोग शामिल थे, जो मुख्य रूप से जनजाति की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार थे और उन्होंने समुदाय का बचाव किया और मवेशी छापे मारे।

The British introduced a series of measures that had important implications, to administer the affairs of the Maasai. They appointed chiefs of different sub-groups of Maasai, who were made responsible for the affairs of the tribe. Restrictions were also imposed on raiding and warfare. These chiefs managed to survive the devastations of war and drought.

अंग्रेजों ने मासाई के मामलों को संचालित करने के लिए कई उपायों की शुरुआत की, जिनके महत्वपूर्ण निहितार्थ थे। उन्होंने मासाई के विभिन्न उप-समूहों के प्रमुख नियुक्त किए, जिन्हें जनजाति के मामलों के लिए जिम्मेदार बनाया गया था। छापेमारी और युद्ध पर भी प्रतिबंध लगाया गया था। ये प्रमुख युद्ध और सूखे की तबाही से बचने में कामयाब रहे।

But the life history of the poor pastoralists was different. In times of war and famine, they lost nearly everything. They had to go looking for work in the towns. Some used to work as charcoal burners, and some did odd jobs to earn their living.

लेकिन गरीब चरवाहों का जीवन इतिहास अलग था। युद्ध और अकाल के समय में, उन्होंने लगभग सब कुछ खो दिया। उन्हें शहरों में काम की तलाश में जाना पड़ता था। कुछ लोग चारकोल बर्नर का काम करते थे, और कुछ अपनी जीविका कमाने के लिए अजीबोगरीब काम करते थे।

The social changes in Maasai society occurred at two levels. First, the traditional difference based on age, between the elders and warriors, was disturbed, though it did not break down entirely. Second, a new distinction between the wealthy and poor pastoralists developed.

मासाई समाज में सामाजिक परिवर्तन दो स्तरों पर हुए। सबसे पहले, वृद्धों और योद्धाओं के बीच उम्र के आधार पर पारंपरिक अंतर को भंग कर दिया गया था, हालांकि यह पूरी तरह से नहीं टूटा। दूसरा, अमीर और गरीब चरवाहों के बीच एक नया भेद विकसित हुआ।

## Conclusion

### निष्कर्ष

Pastoral communities in different parts of the world are affected in different ways by changes in the modern world. Their pattern of movement was affected by new laws and new borders. Pastoralists find it difficult to move in search of pastures and grazing becomes difficult. During the time of drought, cattle die in large numbers. Yet, pastoralists do adapt to new times. They change the paths of their annual movement, reduce their cattle numbers, press for rights to enter new areas, exert political pressure on the government for relief, subsidy and other forms of support and demand a right in the management of forests and water resources.

दुनिया के विभिन्न हिस्सों में देहाती समुदाय आधुनिक दुनिया में होने वाले परिवर्तनों से अलग-अलग तरीकों से प्रभावित होते हैं। उनके आंदोलन का पैटर्न नए कानूनों और नई सीमाओं से प्रभावित था। चरवाहों को चरागाहों की तलाश में चलना मुश्किल लगता है और चरना मुश्किल हो जाता है। सूखे के समय बड़ी संख्या में मवेशियों की मौत हो जाती है। फिर भी, पशुचारक नए समय के अनुकूल होते हैं। वे अपने वार्षिक आंदोलन के रास्ते बदलते हैं, अपने मवेशियों की संख्या कम करते हैं, नए क्षेत्रों में प्रवेश करने के अधिकारों के लिए दबाव डालते हैं, राहत, सब्सिडी और अन्य प्रकार के समर्थन के लिए सरकार पर राजनीतिक दबाव डालते हैं और जंगलों और जल संसाधनों के प्रबंधन में अधिकार की मांग करते हैं।

